शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जुलाई 2019
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सम्पादकीय

मृत्यु का चिंतन

विनोबा

जब मेरा, मेरी इस देह का 70वां साल चल रहा था तब की बात। मैंने देखा, वृत्तियां उठती नहीं, सहज भाव है। कोई कुछ पूछता तो उतना ही वृत्ति का संबंध आता। मुझे लगा, हम ही आखिर तक कहते रहते हैं, तो दूसरों को कुछ सूझता नहीं। उसके बजाय जीते जी मृत्यु का अनुभव करें। वल्लभस्वामी गया (दिसंबर 1964)। एक-एक करके सब जा रहे हैं। जो जाता है, उसकी सलाह तो पीछे नहीं रहती। एक बार जे.पी. से बोलते हुए मैंने कहा था कि यह जो 'तूफान' (प्रदेश-दान का अभियान) चला है, वह अंतिम लड़ाई है। 'वन फाइट मोअर, दि लास्ट एंड दि बेस्ट।' उन्होंने कहा, यह अंतिम लड़ाई नहीं, और कई लड़ाइयां लड़ने के लिए बाबा चाहिए, इतनी जल्दी आपको विदा करने को हम तैयार नहीं। मैंने कहा, पर वह आपके हाथ में होता तब न! मैं अपने मन में मानकर चल रहा हूं कि अपनी मृत्यु के पूर्व मुझे मरना है। मनुष्य कोमृत्यु के पूर्व मरना चाहिए। अपनी वफात अपनी आंखों से देखनी चाहिए। यह मेरी आकांक्षा है। इसलिए मैंने सोचा कि मैं मरने के पहले मर जाऊं और भूदान का क्या होता है देखूं। कोई सलाह पूछने आये तो सलाह दे सकता हूं। बाकी तटस्थ होकर देख्ता रहूं। मैंने साथियों से कहा किअभी मैं यहां पर हूं तो 'डिक्शनरी' जैसा रहूं। डिक्शनरी का उपयोग कोई करता है तो वह उपयोगी होती है, अन्यथा वह अलमारी में पड़ी रहती है। उसको यह उत्साह नहीं होता कि वह खुद उठकर लोगों को शब्दार्थ समझाती फिरे। वैसा मैं यहां रहूंगा।

मेरे साथी पूछते कि आपने आहार क्यों कम किया ? बार-बार उपवास की बात क्यों बोलते हैं? ऐसा है, गीता-प्रवचन में लिखा है, 'मृत्ति-स्मृति-शुद्धये। - मृत्यु का स्मरण अच्छा होता है। जब मैं घर से निकला था तब मेरे सामने ध्येय था, एकांत में जाकर ध्यानधारणादि साधना करने का। परंतु गांधीजी के पास पहुंचा उनके पास रहा 50 वर्ष उनकी आज्ञा में काम किया। अब मेरा ध्येय केवल मृत्यु की राह देखना है। जो कुछ करना था वह सब कुछ हो गया, ऐसा भास है। अभी जो करना है, वह केवल कर्ममुक्त होकर आपके जैसों के प्रश्नों के उत्तर देना, विचार देना, समझाना इतना ही! मैं कर्ममुक्त हो गया हूं, ऐसी हालत में मृत्यु का चिंतन करता हूं तो इससे अमृतत्व प्राप्त होगा। मेरी वृत्ति मनुस्मृति के एक वाक्य के अनुसार है-

नाभिनंदेत मरणं नाभिनंदेत जीवितम्
कालमेव प्रतीक्षेत निर्देशं भूतको यथा

मैं न मरने का अभिनंदन करता हूं न जीवन का। केवल राह देखता हूं, जैसे भृतक यानी सेवक स्वामी की आज्ञा की राह देखता है। मै। रोज शाम को मरने का अभ्यास करता हूं। कहता हूं मरने के बाद जो कहरन है, आज - अभी करो। मरण माझें मरूनि गेलें मज केलें अमर (मेरी मृत्यु की मृत्यु हो गयी मुझे अमर बना दिया।) या, मैंने अपनी मृत्यु अपनी आंखों से देखी, वह अनुपम्य उत्सव था।' इसलिए मैं हररोज रात को मृत्यु का पूर्वप्रयोग करता हूं। और भगवान को कहता हूं कि आज रात को अगर तू ले जायेगा तो मुझे कोई खास काम बाकी नहीं है। प्रेमपूर्वक तेरे पास आऊंगा। कल फिर से जन्म देगा तो जो कुछ थोड़ी सेवा हो सकती है, मुख्यतः वाणी के द्वारा वह कर लूंगा। मरते समय मैं पुरानी बातें सब भूल जाता हूं। गांधीजी को अपने जीवन का बहुत सारा याद रहता तो अंतिम समय वे 'हे राम' नहीं कहते।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जुलाई 2019
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

मृत्यु आयेगी तो किसको आयेगी ? शरीर को आयेगी। हम अमर हो जायेंगे। अब हम अमर भये, न मरेंगे। क्यों ? क्योंकि मिथ्यात्व दियो त्यज। ज्या कारण देह धर्यो सेा कारण दियो त्यज।

किसी की मृत्यु की खबर सुनता हूं तो मुझे लगता है कि शुभ समाचार सुना। आदमी अपने घर जाता है, यह शुभ समाचार नहीं तो क्या है ? असल में वही लोक अपना है और यह पराया है। अब है हमारी बारी। जायेंगे तो कैसे जायेंगे ? हंसते-हंसते, गाते-गाते। हंसते-खेलते चार दिन बिताने हैं।

इस देह में मैं अपनी मृत्यु का खेल देखता हूं और खुश होता हूं। कल्पना करता हूं कि मृत्यु के बाद क्या होगा ? मैं कौन हूं ? करोड़ों लोग मर जाते हैं, महापुरुष भी उससे बचते नहीं। मृत्यु के बाद बचता है सिर्फ भगवान और यह दुनिया। हम आते हैं और जाते हैं। समुद्र में लहरें उठती हैं। कुछ लहरें छोटी होती हैं कुछ बड़ी। कुछ ऊंची उठती हैं, कुछ नहीं। लेकिन हैं वे लहरें हीं।

(11 सितंबर 1981) 'बाबा' 86 वर्ष का हो गया। तो क्या सोचता है ? यह देह काल की है, अंत में जाने वाली है, उससे चिपके रहने में कौनसी मिठास है। जैसे बाबा के जन्मदिन पर सब लोग शांति रखते हैं वैसे बाबा की मृत्यु के दिन पर भी शांति रखनी होगी।

मुझे अब करने को कुछ नहीं रहा, इसलिए मैंने अपनी किताब पर लिख रखा हे - त्याचें कर्तव्य संपले' - उसक कर्तव्य समाप्त हुआ। इस वास्ते प्रारब्धक्षय की राह देखते हुए मेरी दिनभर यही कोशिश होती है कि केवल 'रामहरि' का निरंतर स्मरण करता रहूं।

जैसे रामदास स्वामी ने कहा है मरे त्याचा दुजा शोक वाहे। अकस्मात तो हि पुढे जात आहे (एक मरता है, दूसरा उसका शोक करता है, अचानक वह भी आगे निकल जाता है)। मरना तो सभी को है। सवाल इतना ही है कि मरते समय नामस्मरण चलता रहे। अंतिम क्षण में भगवन्नाम ले सकें, इसके लिये जीवनभर वैसी कोशिश होनी चाहिए।

मैंने एक बहुत बड़ी बात बतायी है - बाबा को भूल जाओ, गीताई को याद रखो।

- अहिंसा की तलाश